International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

नाथ साहित्य और सामाजिक समरसता

डॉ. निशा साहू
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
गिन्दो देवी महिला महाविद्यालय, बदायूं, उत्तर प्रदेश
सम्बद्ध,
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

सार

नाथ साहित्य हिंदी के आदिकालीन धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसमें योगमार्ग, गुरु भक्ति और आत्मज्ञान की साधना को सर्वोच्च माना गया है। नाथ पंथ की उत्पत्ति सिद्ध मत की प्रतिक्रिया स्वरूप हुई है जिसमें भोग विलास, सामाजिक आडंबरों और बाह्याचारों का विरोध किया गया है। नाथ साहित्य का प्रमुख आधार योग साधना और आध्यात्मिक उन्नति है, हठयोग की प्रधानता है जो आत्मशुद्धि, संयम, ब्रह्मचर्य और मोक्ष की प्राप्ति की शिक्षा देता है। नाथ साहित्य ने भारतीय समाज में सामाजिक समानता, आध्यात्मिक जागृति और नैतिक पुनर्जागरण की भावना को जागृति किया है। नाथ संप्रदाय जाति, वर्ग, लिंग भेद से ऊपर उठकर सभी को समानता का अधिकार देता है। गोरखनाथ और अन्य नाथ योगियों ने समाज के निचले वर्गों को आध्यात्मिक मार्ग प्रदान किया जिससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिला। नाथ साहित्य का दर्शन मानव को आंतरिक यात्रा और योगसाधना के माध्यम से आत्म बोध की ओर प्रेरित करता है। नाथ साहित्य ने आगे चलकर भक्ति आंदोलन और संत काव्य परंपरा की मजबूत नींव रखी जिसने हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बीज शब्द: हठयोग, आध्यात्मिकता, समरसता, आडम्बर, सम्प्रदाय।

नाथ पंथ का आविर्भाव सामान्यतः नवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक माना जाता है। यह युग भारतीय धर्म साधना में उथल पुथल का युग था। सामाजिक, राजनीतिक परिवेश में भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल अनेक चुनौतियां एवं विकृतियां प्रवेश कर चुकीं थीं। इस्लामिक आक्रामणकारी राजनीतिक ताकत के रूप में भारत में प्रवेश कर रहा था। भारतीय अध्यात्मिक एवं धार्मिक जीवन क्रम में तंत्र- मंत्र टोने- टोटके आदि प्रभावी होते जा रहे थे। बौद्ध, शाक्त, शैव और वैष्णव समुदायों के

बीच आपसी मतभेद एवं कटुता बढ़ती जा रही थी। इन्हीं परिस्थितियों में समाज का मार्गदर्शन करने हेतु महायोगी गोरखनाथ और नाथपंथियों का अभ्युदय एवं इनके द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ इन्हीं परिस्थितियों की उपज था।

महात्मा बुद्ध ने जिस वैचारिक अधिष्ठान पर बौद्ध मत का प्रतिपादन किया, लगभग हजार वर्ष बीतते- बीतते वह वैचारिक आंदोलन भी उन्हीं रूढ़ियों, कुरीतियों और पाखंडों का शिकार हुआ जिनके गर्भ से उसका जन्म हुआ था । वामाचार, तंत्रवाद एवं तामसिक प्रवृतियों के शिकार इसके अनुयायी विलासी, कलुषित एवं कामुकतापूर्ण जीवन का समर्थन करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि बौद्ध मत से जन सामान्य का विश्वास डगमगाने लगा।

कर्म आधारित वर्ण-व्यवस्था बहुत पहले ही जन्म आधारित जाति व्यवस्था का रूप ग्रहण कर चुकी थी। एक तरफ बौद्ध मत का पतन और दूसरी तरफ जाति व्यवस्था में ऊँच- नीच, छुआछूत जैसी विकृतियों से पीड़ित भारतीय समाज एक ऐसे आध्यात्मिक पंथ की खोज कर रहा था, जो सहज जीवन का ऐसा मार्ग दिखाए जो लौकिक जीवनानंद के साथ पारलौकिक जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करे। महायोगी गोरखनाथ इसी कार्य हेतु भारत के पावन भूमि पर अवतरित हुए। इनके गुरु मत्स्येंद्रनाथ थे। अपने गुरु द्वारा दी हुई शिक्षा का ही अनुसरण कर इन्होंने भारतीय समाज में सदाचरण पर आधारित योग केन्द्रित जनसामान्य हेतु सुलभ मोक्ष मार्ग के लिए उसी सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया जो हजार वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध एवं महावीर जैन ने प्रारंभ की थी।

दया, करूणा, परपीड़ाहरण के साथ- साथ सामाजिक विकृतियों के खिलाफ़ तनकर नाथ पंथ ने विश्वबंधुत्व, विश्वप्रेम, सहानुभूति, न्याय एवं स्वतंत्रता के अधिकार, निःस्वार्थ सेवा, मानव जाति की एकता, धार्मिक आध्यात्मिक दर्शन का प्रतिपादन किया। गोरखनाथ तथा उनके नाथपंथी योगियों ने मानव जाति को सिखाया कि आत्मसंयम आत्मतुष्टि से श्रेष्ठ है, बलिदान योग से महान है, आत्मविजय दूसरों की विजय से श्रेष्ठ है, आध्यात्मिक उन्नति भौतिक उन्नति से महान है, विश्व- प्रेम सर्वनाशी पाशविक शक्ति से कहीं श्रेष्ठ है।

“महायोगी गोरखनाथ ने न केवल वैचारिकी एवं दर्शन का प्रतिपादन किया अपितु योगियों की एक ऐसी श्रृंखला खड़ी की जिन्होंने उनके विचार दर्शन को लोकभाषा में जन- जन तक पहुंचाया। सभी के लिए ईश्वर तक जाने का सरल सहज योगमार्ग प्रतिष्ठित किया। धर्म एवं अध्यात्म का मार्ग जन सामान्य के लिए समान रूप से खोल दिया। गोरखनाथ जी का यह वचन अति लोकप्रिय हुआ कि मन सबसे प्रबल है, यही शिव है, यही शक्ति है, यही पंचतत्वों से निर्मित जीव है, जो इस मन

पर नियंत्रण कर उन्मनावस्था में लीन हो जाते है वहीं तीनों लोगों के रहस्य को जान लेते हैं। यथा-

यहु मन सकती यहु मन सीव। यहु मन पाँच तत्त का जीव।
यहु मन ले जै उनमन रहे। तो तीनि लोक की बांता कहै।।"[1]

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- गोरक्षनाथ ने निर्मम हथौड़े की चोट से साधु और गृहस्थ दोनों की कुरीतियों को चूर्ण- विचूर्ण कर दिया। लोकजीवन में जो धार्मिक चेतना पूर्ववर्ती सिद्धों से आकर उनके पारमार्थिक उद्देश्य से विमुख हो रही थी। उसे गोरक्षनाथ ने नई प्राण शक्ति से अनुप्राणित किया। उन्होंने किसी से भी समझौता नहीं किया, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।

गोरखनाथ तथा उनके अनुयायियों ने गद्य तथा पद्य दोनों में ही पुस्तकें लिखी हैं। जो पुस्तकें नाथ साहित्य से संबंधित हैं, उनके नाम हैं - 'गोरखनाथ की बानी', 'गोरखसार', 'गोरख गणेश गोष्ठी', 'गोरखनाथ की सत्रह कला', 'महादेव गोरख संवाद', 'दत्तात्रेय गोरख संवाद', 'विराट पुराण', 'नखइ बोध', 'योगेश्वरी साखी' तथा 'गोरख योग'।

महायान से वज्रयान, वज्रयान से सहजयान और सहजयान से नाथ सम्प्रदाय का विकास हुआ। जीवन को कर्मकांड के जाल से मुक्त करके सहज रुप की ओर ले जाने का श्रेय नाथों को ही जाता है। यह सम्प्रदाय सिद्ध सम्प्रदाय का विकसित एवं पल्लवित रुप है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "नाथ पंथ या नाथ संप्रदाय के सिद्ध मत, सिद्ध मार्ग, योगमार्ग, योग सम्प्रदाय, अवधूत मत एवं अवधूत सम्प्रदाय नाम भी प्रसिद्ध है।"[2] गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव थे। उसके पश्चात मछेंद्रनाथ हुए और उनके शिष्य गोरखनाथ हुए। नाथों की संख्या प्रधानतः नौ मानी जाती है। नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चंद्र, सत्यनाथ, गोरखनाथ, चर्पट, जलंधर और मलयार्जुन।

नाथ पंथियों में सबसे अधिक प्रभावशाली गोरखनाथ जी ही हैं। राहुल सांस्कृत्यायन ने इनका समय 845 ई. माना है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी नवीं शताब्दी का मानते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 13 वीं सदी का मानते हैं। डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल 11 सदी का मानते है। गोरखनाथ का मुख्य स्थान गोरखपुर माना जाता है किंतु इनके मत का अधिक प्रचार पंजाब तथा राजस्थान में हुआ। इसके ग्रंथों की संख्या 40 मानी जाती है किंतु डॉ. बड़थ्वाल ने केवल 14 रचनाएँ ही इनके द्वारा रचित मानी हैं। जिनके नाम हैं- 'सबदी', 'पद', प्राण सांकली', 'सिष्यादरसन', ' नरवै बोध', 'अभैमात्रा जोग', 'आतमबोध', 'पन्द्रह तिथि', 'सप्तवार', 'मछीन्द्र गोरख बोध', 'रोमावली', 'ग्यान तिलक', 'ग्यान चौंतीसा' एवं 'पंचमात्रा'।

"गोरखनाथ ने हठयोग का उपदेश दिया था। हठयोगियों के 'सिद्ध सिद्धांत पद्धति' ग्रंथ के अनुसार 'ह' का अर्थ है 'सूर्य' तथा 'ठ' का 'चन्द्र'। इन दोनों के योग को ही 'हठयोग' कहते है। गोरखनाथ ने ही षट् चक्रों वाला योग मार्ग हिंदी साहित्य में चलाया था। इस मार्ग में विश्वास करने वाला हठयोगी साधना द्वारा शरीर और मन को शुद्ध करके शून्य में समाधि लगाता था और वहीं ब्रह्म का साक्षात्कार करता था। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर वह है जिसका चित्त विकार साधन होने पर भी विकृत नहीं होता।

नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।"[3]

नाथ साहित्य की भाषा में सधुक्कड़ी का प्रमुख स्थान है जिसमें हिंदी बोलियाँ ब्रज और अवधी के शब्दों का सुंदर मिश्रण पाया जाता है। इसकी भाषा प्रतीकात्मक, रहस्यमय और आध्यात्मिक है। नाथ कवियों ने अपने संदेशों को गूढ़ रूप में व्यक्त करने के लिए उलटवाँसी और संध्या भाषा का प्रयोग किया जिससे उनके विचार सामान्य जन और साधक दोनों के लिए शिक्षाप्रद बन गए। नाथ साहित्य में दोहा छंद की बहुलता मिलती है जो इसकी सरल, भाव प्रधान और लोकाभिमुख शैली को दर्शाता है। भाषा की यह विशिष्टता आगे चलकर संत साहित्य और भक्ति काव्य की नींव बनी।

वह योगी कैसा जिसे समाज की पीड़ा सुनाई न दे। सुनकर वह उसे दूर करने के लिए समाज के साथ खड़ा न हो और उसका मार्गदर्शन न करें। समाधान तक सामाजिक संघर्ष का साथी न बने। इसी समाज दर्शन पर केंद्रित नाथपंथी प्रमुख योगियों ने अपनी आध्यात्मिक साधना को लक्ष्य करते हुए सामाजिक चेतना से कभी अपने को विरत नहीं किया। नाथ युग के प्रवर्तक योगी योग साधना के मार्ग में अविश्रांत बढ़ते हुए वह अपने व्यक्तित्व को निर्मल बनाए हुए दूसरों के अनुकरण योग्य बने रहे। समाज को गतिशील बनाए रखने के लिए आदर्श अनुकूल आचरण के वे पक्षधर है। कथनी-करनी की एकरूपता नाथ पंथी योगियों की विशेषता भी है।

नाथ पंथ द्वारा प्रवर्तित योग मार्ग वह साधना का पथ है जिसपर चलकर सांप्रदायिक संकीर्ण मनोवृत्तियों का नाश किया जा सकता है तथा वृहद संवेदनशील लोककल्याणकारी मानव समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है। "नाथों का यह अलौकिक व्यक्तित्व ही था जो बर्बर मुसलमानों को अपना अनुयायी बनाने में सफल हुआ। उदाहरण- बाबा रतननाथ, बाल गुदई और सिद्ध गरीबनाथ के अनुयायी मुसलमान योगियों की श्रद्धाशीलता उल्लेखनीय है। हिन्दू- मुस्लिम ऐक्य की जिस भावना का प्रबल प्रचार कबीर आदि संतों ने किया। उसकी नींव नाथपंथी योगियों ने ज्ञानकर्म की एकरूपता पर आधारित अपनी समाज केंद्रित सहज साधना पद्धतियों से पहले ही डाल

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

रखी थी। घट- घट वासी आत्मतत्व की सहज आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के साथ प्रेम, करुणा, अहिंसा, संयम और संतोष को योग, उपासना एवं भक्ति का अस्त्र बनाकर नाथ पंथ के योगियों ने मानव-मानव में एकरसता का संदेश दिया। वे दया एवं करुणा के गीत गाते समाज के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरणा स्तंभ बने।"[4]

गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथपंथ ने ज्ञान व कर्म के इसी अपने विशिष्ट अद्वैत सिद्धांत पर उच्च- नीच का भेद खत्म किया। धनी हो या निर्धन, ब्राह्मण हो या शूद्र, बौद्ध हो या जैन, हिंदू हो या मुस्लिम सभी को समान दृष्टि से स्वीकार्य उपासना का सहज मार्ग 'योग' का प्रतिपादन किया।

द्विवेदी जी ने नाथ संप्रदाय के सामाजिक योगदान को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए लिखा कि यह संप्रदाय जाति, वर्ग, लिंग भेदभाव से ऊपर उठकर सभी को साधना का अधिकार देता था। गोरखनाथ और अन्य नाथ योगियों ने समाज के निचले वर्गों को अध्यात्मिक मार्ग प्रदान किया जिससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिला। उनकी सादगी और साहस ने उन्हें जनमानस में लोकप्रिय बनाया। कबीर, नानक और अन्य निर्गुण संतों पर नाथ विचारों का प्रभाव स्पष्ट है। द्विवेदी जी ने इसे एक सांस्कृतिक पुल के रूप में देखा, जो वैदिक और लोक परंपराओं को जोड़ता था। नाथ साहित्य ने सामाजिक समानता, आध्यात्मिक जागृति और नैतिक पुनर्जागरण की भावना को जागृत किया। इस साहित्य ने बाह्य आडम्बर, जाति भेदभाव और भोगवादी प्रवृत्तियों का तीव्र विरोध किया। नाथ सम्प्रदाय ने गृहस्थ जीवन की महत्ता को स्वीकार करते हुए साधना को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जोड़ा।

नाथ पंथ के साधकों ने समाज को सिखाया कि सच्ची साधना केवल जंगलों या मठों में नहीं, बल्कि गृहस्थ जीवन में रहकर भी संभव है। इन्होंने नारी के प्रति दृष्टिकोण में सुधार लाते हुए नारी सम्मान और समरस समाज की स्थापना की दिशा में प्रेरणा दी। उन्होंने कर्मकांड, पाखंड मुक्त उपासना पद्धति प्रदान की जो अमीर- गरीब, ऊंच-नीच सभी के लिए समान रूप से सर्वसुलभ थी। इस प्रकार नाथ पंथ एक सामाजिक क्रांति के रूप में थी जो हर व्यक्ति को हंसते-खेलते जीवन जीने का उपदेश प्रेषित कर रही थी।

"हसिबा खेलिबा रहिबा रंग। काम, क्रोध न करिबा संग।
हसिबा खेलिबा गाइबा गीत। दिढ करि राषि आपना चीत।।"[5]

इस प्रकार नाथ साहित्य ने 'सर्वजन हिताय' के दर्शन के साथ एक ऐसे समाज की कल्पना की जो वैमनस्य से मुक्त हो। नाथ साहित्य ने हिंदी साहित्य को आध्यात्मिकता, सामाजिक समानता और लोक भाषा की समृद्ध परंपरा से समृद्ध किया। यह साहित्य आज भी सामाजिक कुरूतियों को दूर करने और सांस्कृतिक एकीकरण में प्रासंगिक है।

<u>संदर्भ</u>

1. नाथ पंथ का समाज दर्शन: डॉ. राव प्रदीप कुमार, मोती पेपर कन्वर्टर्स, 2019
2. नाथ सम्प्रदाय: द्विवेदी हजारीप्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, 2019
3. हिंदी साहित्य का इतिहास: डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपरबैक्स, 2021
4. नाथ पंथ का समाज दर्शन: डॉ. राव प्रदीप कुमार, मोती पेपर कन्वर्टर्स, 2019
5. गोरखबानी: सं. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल, 'सबदी' 7